National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 278-280
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Pragyan Paramita
Deptt. of Hindi,
CDOE, Utkal University

Correspondence:
Dr. Pragyan Paramita
Deptt. of Hindi,
CDOE, Utkal University

आधुनिक काल में महिलाओं की बदलती स्थिति : "पचपन खंभे लाल दीवारें" के संदर्भ में

Dr. Pragyan Paramita

शोधसार

वर्तमान समय में शिक्षा, रोजगार, राजनीति, साहित्य, विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्रों में महिलाओं ने उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आई है। इसके बावजूद स्त्री आज भी अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक बंधनों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकी है। आधुनिकता ने स्त्री को अवसर तो प्रदान किया है, परंतु वह उसके भीतर चलने वाले द्वंद्व, संघर्ष और अकेलेपन को पूर्णतः समाप्त नहीं कर पाया है। हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन विशेष रूप से उषा प्रियंवदा के उपन्यास "पचपन खंभे लाल दीवारें" पर केंद्रित है। यह कृति एक शिक्षित, आत्मनिर्भर स्त्री के जीवन-संघर्ष, उसकी मानसिक स्थिति तथा सामाजिक दबावों का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती है। उपन्यास के माध्यम से आधुनिक समाज में स्त्री की परिवर्तित भूमिका और उसकी जटिलताओं का मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार, यह अध्ययन नारी-विमर्श की दृष्टि से स्त्री-अस्तित्व, उसकी चुनौतियों तथा उसकी आत्म-पहचान की खोज को समझने का प्रयास करता है।

बीज शब्द : नारी विमर्श, आधुनिक युग, आर्थिक स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, त्याग, अकेलापन, द्वंद्व, स्वतंत्र पहचान, उषा प्रियंवदा ।

प्रस्तावना

नारी-विमर्श साहित्य और समाज में स्त्री की स्थिति, अधिकारों, अनुभवों और अस्मिता से जुड़ा एक महत्वपूर्ण चिंतन है। नारी-विमर्श यह प्रश्न उठाता है कि क्यों स्त्री को सदियों से पुरुष के अधीन माना गया और उसके व्यक्तित्व, इच्छाओं तथा स्वतंत्रता को सीमित किया गया। आधुनिक समय में शिक्षा और जागरूकता के प्रसार के साथ स्त्रियों ने अपने अधिकारों के प्रति सजगता दिखाई है और वे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। हिंदी साहित्य में भी नारी-विमर्श के माध्यम से स्त्री के संघर्ष, उसकी पीड़ा, आकांक्षा, आत्मनिर्भरता और अस्मिता को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख नारी कथाकारों में उषा प्रियंवदा का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को एक नई दृष्टि प्रदान की है। इनके साहित्य का मुख्य केंद्र मध्यवर्गीय जीवन तथा स्त्री-मन का सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण है। उषा प्रियंवदा की रचनाओं में स्त्री के अकेलेपन, अंतर्द्वंद्व, सामाजिक बंधनों तथा आत्मसम्मान से जुड़ी समस्याओं का गहन विश्लेषण मिलता है। वे मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ अपने पात्रों की आंतरिक अवस्थाओं का अत्यंत सजीव चित्रण करती हैं। "पचपन खंभे लाल दीवारें" उनकी प्रमुख कृतियों में से एक है, जो नारी-विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

उपन्यास का स्वरूप और कथा-वस्तु

"पचपन खंभे लाल दीवारें" एक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक उपन्यास है। इसकी नायिका सुषमा एक शिक्षित, आत्मनिर्भर और कार्यशील महिला है। वह एक कॉलेज में प्राध्यापिका तथा छात्रावास की वार्डन है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद उसका जीवन पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है। सुषमा के पिता सेवानिवृत्त हैं अत: परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उसके कंधों पर है। चार छोटे भाई-बहनों की देखभाल और उनकी शिक्षा का भार भी उसी पर है। इस प्रकार वह केवल एक बेटी नहीं, बल्कि परिवार की 'कमाऊ सदस्य' बन जाती है। उसके निजी जीवन, इच्छाओं और सपनों का स्थान पारिवारिक कर्तव्यों के नीचे दब जाता है।

उपन्यास में सुषमा के जीवन के माध्यम से यह दिखाया गया है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद स्त्री को मानसिक और सामाजिक स्तर पर कितनी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

आधुनिक काल में महिलाओं की बदलती स्थिति

आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। शिक्षा के प्रसार ने स्त्री को आत्मविश्वास और जागरूकता प्रदान की है। रोजगार के अवसरों ने उसे आर्थिक स्वतंत्रता दी है। वह परिवार की आय में योगदान देने के साथ-साथ स्वयं निर्णय लेने की क्षमता भी प्राप्त कर रही है। परंतु यह परिवर्तन एकरूप नहीं है। एक ओर स्त्री आधुनिकता और स्वतंत्रता की ओर बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मान्यताएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ अब भी उसे बांधती हैं। आलोच्य उपन्यास इसी द्वंद्व को उजागर करता है।

सुषमा आधुनिक शिक्षित महिला है, परंतु उसके निर्णयों पर परिवार और समाज का नियंत्रण बना रहता है। यह स्थिति दर्शाती है कि आधुनिकता के बावजूद स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता अभी भी प्राप्त नहीं हुई है।

आर्थिक स्वतंत्रता और उसके बंधन

नारी विमर्श का एक महत्वपूर्ण पक्ष आर्थिक स्वतंत्रता है। सुषमा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है। वह कॉलेज में प्राध्यापिका है और नियमित आय अर्जित करती है। परंतु उसकी आय उसके व्यक्तिगत सुख-सुविधा के लिए नहीं, बल्कि परिवार के भरण-पोषण के लिए समर्पित है। यह स्थिति दर्शाती है कि आर्थिक स्वतंत्रता भी स्त्री को सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं कर पाती। सुषमा अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में असमर्थ है क्योंकि उसके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी का बोझ है।

आधुनिक समाज में भी अनेक कामकाजी महिलाएँ इसी प्रकार के दोहरे दायित्व को निभाती हैं—कार्यालय और घर दोनों की जिम्मेदारी। आर्थिक आत्मनिर्भरता उन्हें आत्मसम्मान तो प्रदान करती है, परंतु उससे जुड़ी अपेक्षाएँ और दबाव भी उन पर बढ़ जाते हैं।

पारिवारिक जिम्मेदारी और त्याग

भारतीय समाज में स्त्री से त्याग और समर्पण की अपेक्षा की जाती है। सुषमा भी इसी सामाजिक संरचना का हिस्सा है। वह अपने पिता और भाई-बहनों के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन का त्याग करती है। उसकी इच्छाएँ, प्रेम और निजी सुख पारिवारिक कर्तव्यों के कारण पीछे छूट जाते हैं। यह स्थिति केवल सुषमा की नहीं, बल्कि उन असंख्य महिलाओं की है जो परिवार के लिए अपने सपनों का बलिदान कर देती हैं।

उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि क्या केवल स्त्री ही परिवार की जिम्मेदारी उठाने के लिए बाध्य है ? क्या उसे अपने जीवन के निर्णय लेने का अधिकार नहीं होना चाहिए ?

अकेलापन और घुटन का प्रतीकात्मक चित्रण

उपन्यास का शीर्षक "पचपन खंभे लाल दीवारें" अत्यंत प्रतीकात्मक है। यह कॉलेज के छात्रावास की इमारत का वर्णन है, परंतु साथ ही सुषमा के जीवन की घुटन और कैद का भी प्रतीक है। लाल दीवारें और खंभे उस अवरुद्ध वातावरण को दर्शाते हैं जिसमें सुषमा का जीवन सीमित हो गया है। वह बाहरी रूप से सफल और आत्मविश्वासी दिखाई देती है, परंतु भीतर से अकेली और उदास है।

आज आधुनिक समाज की कई महिलाएँ बाहरी सफलता के बावजूद मानसिक अकेलेपन से जूझ रही हैं। यह उपन्यास इसी आंतरिक पीड़ा को उजागर करता है।

सामाजिक रूढ़ियाँ और कामकाजी महिला

उपन्यास उस समय के सामाजिक ढांचे को सामने लाता है जहाँ स्त्री के प्रेम और व्यक्तिगत निर्णयों को महत्व नहीं दिया जाता। सुषमा के जीवन में भी प्रेम का प्रसंग आता है, परंतु वह पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उसे स्वीकार नहीं कर पाती।

यह स्थिति दर्शाती है कि समाज में स्त्री के व्यक्तिगत जीवन को अक्सर गौण माना जाता है। कामकाजी महिला होने के बावजूद वह सामाजिक रूढ़ियों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाती। आज भी कई स्थानों पर महिलाओं को विवाह, करियर और परिवार के बीच कठिन चुनाव करने पड़ते हैं। उपन्यास इस द्वंद्व को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है।

मानसिक और सामाजिक संघर्ष

सुषमा के अंतर्मन में निरंतर संघर्ष चलता रहता है—कर्तव्य और व्यक्तिगत सुख के बीच। वह अपने परिवार के प्रति उत्तरदायी है, परंतु उसके भीतर एक स्त्री भी है जो प्रेम, सम्मान और स्वतंत्र जीवन की आकांक्षा रखती है।

यह मानसिक द्वंद्व आधुनिक नारी की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। आधुनिकता ने उसे अवसर तो प्रदान किए हैं, परंतु मानसिक स्तर पर वह अब भी अनेक संघर्षों से घिरी हुई है। उपन्यास यह स्पष्ट करता है

कि नारी विमर्श केवल बाहरी स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं, बल्कि आंतरिक आत्मसम्मान और पहचान का भी प्रश्न है।

स्वतंत्र पहचान की खोज

आधुनिक नारी की सबसे बड़ी आकांक्षा है—अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना। सुषमा भी एक ऐसी स्त्री है जो आत्मनिर्भर है और अपने अस्तित्व को समझती है। परंतु परिवार और समाज के दबाव के कारण उसकी पहचान 'कमाऊ बेटी' तक सीमित हो जाती है। उसकी व्यक्तिगत पहचान धुंधली पड़ जाती है।

यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या समाज स्त्री को उसकी व्यक्तिगत पहचान के साथ स्वीकार करने के लिए तैयार है?

नारी विमर्श की प्रासंगिकता

आज के बदलते परिवेश में नारी विमर्श और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, परंतु समानता का लक्ष्य अभी पूर्णतः प्राप्त नहीं हुआ है।

"पचपन खंभे लाल दीवारें" केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि स्त्री जीवन के यथार्थ का दस्तावेज है। यह कृति हमें यह समझने में सहायता करती है कि आधुनिकता के बावजूद स्त्री के सामने अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। आलोच्य उपन्यास समाज को यह संदेश देता है कि स्त्री को केवल कर्तव्य और त्याग की मूर्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। उन्होंने शिक्षा, रोजगार और सामाजिक चेतना के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित की है। परंतु इसके साथ ही उन्हें पारिवारिक और सामाजिक अपेक्षाओं का सामना भी करना पड़ता है।

"पचपन खंभे लाल दीवारें" के माध्यम से उषा प्रियंवदा ने आधुनिक नारी के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्ष का मार्मिक चित्रण किया है। सुषमा का चरित्र हमें यह सिखाता है कि आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद मानसिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करना अभी भी एक चुनौती है।

यह उपन्यास आधुनिक समाज के लिए एक दर्पण है, जो हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि स्त्री को समान अवसर, सम्मान और स्वतंत्र निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि "पचपन खंभे लाल दीवारें" नारी विमर्श की दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है, जो आधुनिक काल में महिलाओं की बदलती स्थिति को गहराई से प्रस्तुत करती है और समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है।

संदर्भ सूची

1. उषा प्रियंवदा, पचपन खंभे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. उषा प्रियंवदा, रुक्मिणी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सुधा अरोड़ा, नारी चेतना के आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. मृणाल पांडे, स्त्री: देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. मैत्रेयी पुष्पा, स्त्री विमर्श और हिंदी कथा साहित्य, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. रामविलास शर्मा, हिंदी साहित्य और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. नामवर सिंह, कहानी: नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. सिमोन द बोउवार, हिंदी अनुवाद: द सेकेंड सेक्स, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।